अथश्री शिवनामामृतम् ॥ ॐ मृत्युञ्जयाय रुद्राय
नीलकण्ठाय शम्भवे । अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः ॥
श्रीकर शिव शिव साम्बशिव । श्रितभक्तावनदीक्ष शिव ॥ ध्रुव० ॥
अजमुखसुरनुतपाद शिव । आखण्डलमदहार शिव ॥ १
इभचर्माम्बर सोमशिव । ईश बिलेशयभूष शिव ॥ २
उमयादृतवामाङ्ग शिव । ऊरीकृतविषपान शिव ॥ ३
ऋषिजनमानसहंस शिव । ऋक्षाधीशकिरीट शिव ॥ ४
एकाद्वय परब्रह्म शिव । ऐक्यप्रदनिगमेड्य शिव ॥ ५
ॐकारात्मक देव शिव । औदास्यात्तसुवेष शिव ॥ ६
करुणाकर कमनीय शिव । खलगर्वापहशूर शिव ॥ ७
गङ्गाधरश्टङ्गार शिव । घनसारोज्वलकाय शिव ॥ ८

चरणोत्ताडितकाल शिव । छिन्नमहाभवपाश शिव ॥९॥
जगदाधार गिरीश शिव । झणतकशब्दैर्नटन शिव ॥१०
टङ्काराञ्चितचाप शिव । ठाकृतिमायायुक्त शिव ॥११॥
डमरुकवाद्यामोद शिव । ढक्काडमरुविशेष शिव ॥१२॥
तुङ्गमहोक्षारूढ शिव । स्थावरजङ्गमरूप शिव ॥१३
दक्षाध्वरहर सोमशिव । धनपति मित्र साम्बशिव ॥१४॥
पशुपतिपावनमूर्तिशिव । फालम्बक खलवैरि शिव ॥१५
बालकभक्तिप्रीत शिव । भक्तजनावन दक्ष शिव ॥१६॥
महिमाकर मदनारिशिव । महिताखिलवर्णात्मशिव ॥१७
यमपरिभीतत्रातः शिव । रजतगिरीन्द्रनिवास शिव ॥१८
लीलातोषितलोक शिव । वैश्रवणप्रिय वीरशिव ॥१९॥

शशिधरशङ्कर शान्तशिव। षण्मुखहृदयानन्द शिव॥२०

सत्यज्ञानानन्द शिव। हासोत्फुल्लमुखाब्ज शिव॥२१॥

कान्तसुमङ्गलरूप शिव। क्षेमङ्कर वरनाम शिव॥२२॥

ज्ञप्तिरूप सर्वज्ञ शिव। ज्ञानप्रद चिद्रूप शिव॥२३॥

जयजय जयजय साम्बशिव। भयहर भवहर साम्बशिव॥२४.

॥हर हर नमः पार्वतीपतये हरहर महादेव ॐ॥

वन्दे शम्भुमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्कवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शङ्करम्॥

प्रपन्नपारिजातस्त्वं शरणागतरक्षकः।
शरणं त्वां प्रपन्नोऽस्मि यमपाशाद्विमोचय॥ श्रीः॥

नामस्मरणादन्योपायं नहि पश्यामो भवतरणे ।
राम हरे कृष्ण हरे तव नाम वदामि सदा नृहरे ॥ध्रुव०॥
वेदोद्धारविचारमते सोमकदानवसंहरते ।
मीनाकारशरीर नमो भक्तं ते परिपालय माम् ॥
मन्थानाचलधारण भो देवासुरपरिपाल विभो ।
कूर्माकारशरीर नमो भक्तं ते परिपालय माम् ॥
भूचोरकहर पुण्यमते क्ष्मोद्धृतभूगोल हरे ।
क्रोडाकारशरीर नमो भक्तं ते परिपालय माम् ॥
हिरण्यकशिपुच्छेदन भो प्रह्लादाभयदायक हेतो ।
नरसिंहाङ्कितरूप नमो भक्तं ते परिपालय माम् ॥
बलिबन्धनविततमते पादोदकविहताघतते ।
पदवद्वेष मनोज्ञ नमो भक्तं ते परिपालय माम् ॥

क्षितिपतिवंशक्षयकरमूर्ते क्षितिसुररक्षास्थितिमूर्ते ।
भृगुकुलराम परेश नमो भक्तं ते परिपालय माम् ॥
सीतानायक दाशरथे दशरथनन्दन लोकगुरो ।
रावणमर्दन राम नमो भक्तं ते परिपालय माम् ॥
कंसारे कमलेश हरे गिरिधर गोपाल विभो ।
कालियमर्दन कृष्ण नमो भक्तं ते परिपालय माम् ॥
त्रिपुरसतीव्रतमानहर शङ्कर कार्मुकसायकरूप ।
बुद्ध ज्ञानसुबुद्ध नमो भक्तं ते परिपालय माम् ॥
शिष्टजनावन दुष्टहर खगतुरगोत्तमवाहन भोः ।
कल्किरूप कराल नमो भक्तं ते परिपालय माम् ॥
॥ इतिश्रीहरिदशावतारनामामृतं सम्पूर्णम् ॥ ॐ ॥
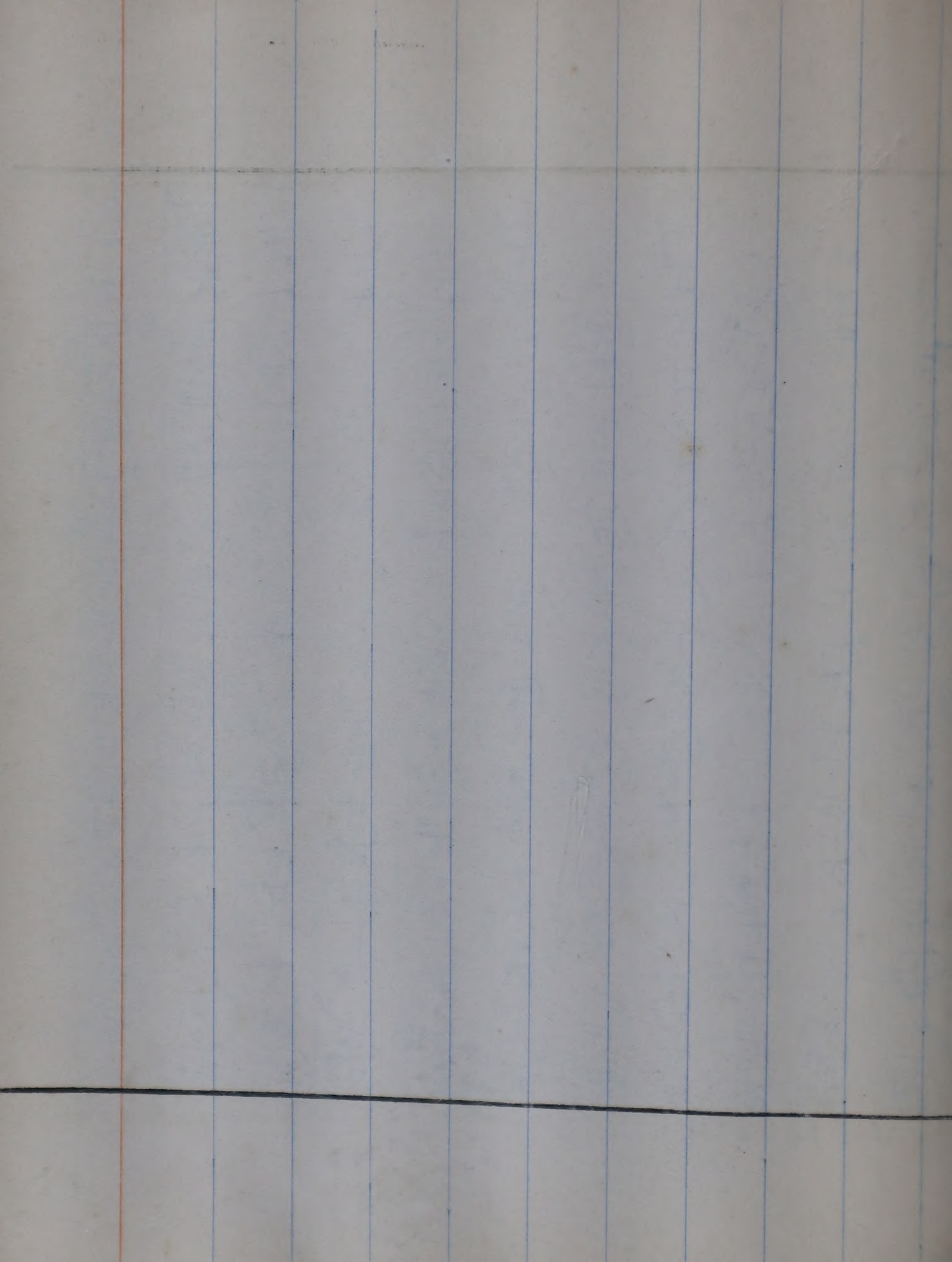
अथ रामनामामृतम् ॥ हरिः ॐ॥

श्रीरामचन्द्रः श्रितपारिजातः समस्तकल्याणगुणाभिरामः।
सीतामुखाम्भोरुहचञ्चरीको निरन्तरं मङ्गलमातनोतु॥

राम राम जय राजा राम। राम राम जय सीताराम ॥ध्रुव०॥

सत्यानन्दचिदात्मक राम। अङ्गीकृतमूर्तित्रय राम॥१॥
सर्गस्थितिलयकर्तृक राम। योगिप्रवरहृदालय राम॥२
श्रीमद्दशरथनन्दन राम। कौसल्याम्बुधिमौक्तिक राम॥
विश्वामित्रमतानुग राम। घोरताटकामर्दन राम॥४॥
स्वीकृतचापाम्नायक राम। मारीचादिनिपातक राम॥५॥
कौशिकमखसंरक्षक राम। संस्मृतगङ्गासत्कथ राम॥६
श्रीमदहल्योद्धारक राम। गौतममुनिसम्पूजित राम॥

सुरमुनिवरगणसंस्तुत राम। नाविकधावितमृदुपद राम ॥८॥
मिथिलापुरजनमोदद राम। विदेहमानसरञ्जक राम ॥९॥
त्र्यम्बककार्मुकभञ्जक राम। सीतार्पितवरमालिक राम ॥१०॥
धृतवैवाहिककौतुक राम। भार्गवदर्पविनाशक राम ॥११॥
श्रीमदयोध्यानन्दक राम। सानुजसौख्यविधायक राम ॥१२

॥इति बालकाण्डम्॥ * ॥अथायोध्या काण्डम्॥

सन्नुतगुणगणभूषित राम। अवनीकामिनिकामित राम ॥१३॥
विघ्नितपट्टनिबन्धन राम। आश्रितमुनिजनवेषक राम॥१४
पितृवाक्याश्रितकानन राम। प्रियगुहपूजितपादुक राम॥१५
विधृतजटावलिमण्डित राम। भरद्वाजदृगानन्दन राम॥१६
मुनिवरदर्शितसुखपद राम। चित्रकूटाद्रिनिकेतन राम ॥१७

दशरथसन्ततचिन्तित राम। कैकेयीसुतवन्दित राम॥१८

विरचितनिजपितृकर्मक राम। राज्यागमनप्रार्थित राम॥१९॥

विनयाश्वासितभ्रातृक राम। भरतार्पितनिजपादुक राम॥२०

परिहृतपौरजनागम राम। दण्डकावनजनपावन राम॥२१

॥ इत्ययोध्याकाण्डम् ॥ ❀ ॥अथारण्यकाण्डम्॥

दुष्टविराधविनाशन राम। विरचितदानवविग्रह राम॥२२

शरभङ्गार्चितमृदुपद राम। अत्रिमहामुनिपूजित राम॥२३

कुम्भतनूभवसंस्तुत राम। खड्गवरायुधधारक राम॥२४

गृध्राधिपसंसेवित राम। पञ्चवटीतटविहरण राम॥२५

शूर्पणखास्यविकारक राम। खरदूषणमुखनाशक राम॥२६

सीताप्रियहरिणानुग राम। मारीचार्तिकृदाशुग राम॥२७

अपहृतसीतान्वेषक राम। गृध्राधिपगतिदायक राम॥२८

कबन्धबाहुच्छेदक राम । शबरीदत्तफलाशन राम ॥ २९॥

॥ इत्यरण्यकाण्डम् ॥ * ॥ अथ किष्किन्धाकाण्डम् ॥

आश्रितपम्पाकानन राम । संस्मृतसीतासद्गुण राम ॥ ३०

हनूमत्सेवितनिजपद राम । नतसुग्रीवाभीष्टद राम ॥ ३१

अङ्गुष्ठोद्धृतदुन्दुभि राम । तालेच्छेदनशरवर राम ॥ ३२

गर्वितवालिप्रमथन राम । वानरराज्यस्थापक राम ॥ ३३

प्रस्रवणाद्रिविहारक राम । हितकरलक्ष्मणसंयुत राम ॥ ३४

कालातिक्रमकोपित राम । भीतकपीशप्रार्थित राम ॥ ३५

मेलितकपिकुलवन्दित राम । मारुतपुत्रप्रेषक राम ॥ ३६

॥ इति किष्किन्धाकाण्डम् ॥ * ॥ अथ सुन्दरकाण्डम् ॥

कपिवरसन्ततचिन्तित राम । तद्गतिविघ्नध्वंसक राम ॥ ३७

प्रेषितनिजकरमुद्रक राम । सीताप्राणाधारक राम ॥ ३८ ॥

दुष्टदशाननदूषक राम । शिष्ट हनूमद्भूषित राम ॥ ३९ ॥
सीतोदितकाकावन राम । कारितलङ्कादहनक राम ॥ ४०
कृतचूडामणिदर्शन राम । कपिवर वचनाश्वासित राम ॥ ४१

॥ इति सुन्दरकाण्डम् ॥ ❀ ॥ अथ युद्धकाण्डम् ॥

रावणनिधनप्रस्थित राम । वानरसैन्यसमावृत राम ॥ ४२
शोषितशरधीशार्थित राम । विभीषणाभयदायक राम ॥ ४३
पर्वतसेतुनिबन्धन राम । घटकर्णशिरच्छेदक राम ॥ ४४
राक्षसकोटिविमर्दक राम । संहृतदशमुखरावण राम ॥ ४५
विधिभवमुखसुरसंस्तुत राम । सीताप्रत्ययतोषित राम ॥ ४६
सीतादर्शनहर्षित राम । अभिषिक्तविभीषणनुत राम ॥ ४७
पुष्पकयानारोहण राम । भरद्वाजादिनिषेवित राम ॥ ४८

भरतप्राणनावितरण राम । साकेतपुरीभूषण राम ॥ ७९

पट्टाभिषेकालङ्कृत राम । रत्नलसत्पीठस्थित राम ॥ ८०

सकलस्वीयसमावृत राम । पार्थिवकुलसन्मानित राम ॥ ८१

विभीषणार्पितरङ्गक राम । कीशकुलानुग्राहक राम ॥ ८२ ॥

सकललोकसंरक्षक राम । त्रैलोक्याभयदायक राम ॥ ८३

जयजय राघव सीताराम । जयजय सज्जनपोषक राम ॥ ८४

॥ श्रीसीताकान्तस्मरणे जयजय राम ॥ ॐ ॥

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं
सीतापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपम् ।
आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं
रामं निशाचरविनाशकरं नमामि ॥

अथश्रीमदाचार्य शङ्करभगवत्पाद स्तुतिः।

विदिताखिलशास्त्रसुधाजलधे
महितोपनिषत्कथितार्थनिधे ।
हृदये कलये विमलं चरणं
भव शङ्करदेशिक मे शरणम् ॥

करुणावरुणालय पालय मां
भवसागर दुःखविदूनहृदम् ।
रचिताखिलदर्शनतत्त्वविदं –भव शङ्कर०॥

भवता जनता सुहिता भविता
निजबोधविचारणचारुमते ।
कलयेश्वरजीवविवेकविदं–भव शङ्कर० ॥

भव एव भवानिति मे नितरां
समजायत चेतसि कौतुकता ।
मम वारय मोहमहाजलधिं - भव शङ्कर० ॥

सुकृतेऽधिकृते बहुधा भवतो
भविता पददर्शनलालसता ।
अतिदीनमिमं परिपालय मां - भव शङ्कर० ॥

गुरुपुङ्गव पुङ्गवकेतन ते
समतामयते नहि कोऽपि सुधीः ।
शरणागतवत्सल तत्वनिधे - भव शङ्कर० ॥

विदिता न मया विशदैककला
न च किञ्चन काञ्चनमस्ति गुरो ।
द्रुतमेव विधेहि कृपां सहजां — भव शङ्कर० ॥

जगतीमवितुं कलिताकृतयो
विचरन्ति महामहसश्छलतः ।
अहिमांशुरिवात्र विभासि गुरो
भव शङ्कर देशिक मे शरणम् ॥

॥ इति श्रीगुरु शङ्कराचार्य शरणागति प्रार्थनम् ॥

हे परमेश्वर दीन दयालो
दयासिन्धो त्राहीश कृपालो ।

कृष्ण कृष्ण राधाकृष्ण	राम राम दशरथराम
हे गोकुलपाल हे गोपीलोल	हे राजाराम हे मेघश्याम
नन्दकुमार नवनीतचोर	रविकुलभूषण राजीवनयन
हे नन्दबाल ॥	हे सीताराम ॥